समाज विकासमाला

नज़ीर की नज़्में

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : २८

नज़ीर की नज़्में

संग्राहक
शिवनाथसिंह शांडिल्य

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५६

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक

नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

इस किताब में नज़ीर की कुछ चुनी हुई कविताएं दी गई हैं। नज़ीर उर्दू के बहुत बड़े कवि हुए हैं; लेकिन उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह ऐसा है कि पढ़ा-बेपढ़ा हर कोई उसे समझ सकता है। उन्होंने बड़ी सीधी-सादी भाषा में बताया है कि यह दुनिया धोखे की टट्टी है और मोह-माया, धन-दौलत, संगी-साथी, कोई भी आदमी के साथ नहीं जाता। इसलिए अच्छे-अच्छे काम करो, दूसरों की भलाई करो, लालच न रक्खो और इस दुनिया में रहते हुए भी उसके बन्धन और चक्कर से दूर रहो।

ये सब बातें उन्होंने इस ढंग से कही हैं कि पढ़कर आपकी तबीयत खुश हो जायगी और दिल पर गहरा असर होगा।

—सम्पादक



नज़ीर

नज़ीर की नज़्में

नज़ीर कौन थे ?

नज़ीर उर्दू भाषा के बेजोड़ कवि थे। उन्होंने जिस रंग में कविता की है, उस रंग में उर्दू भाषा के किसी कवि ने नहीं की। उनकी कविताएँ जैसे निराली थीं, वैसे ही वह स्वयं थे। उनके बारे में एक कवि ने बड़ी सही बात कही है–

"कहने को था नज़ीर, मगर बेनज़ीर था।"

नज़ीर का जन्म सन् १७३५ ई० में आगरे के ताजगंज मोहल्ले में आ था। वहीं वह बड़े हुए और वहीं उन्होंने अरबी और फ़ारसी में ऊंची शिक्षा पाई। लगभग ४० वर्ष की उम्र में उन्होंने ताजगंज छोड़ दिया और मोहल्ला मोरी दरवाजे में मकान बना कर रहने लगे। वहीं १६ अगस्त सन् १८३० ई० को ९५ वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। वह अपने ही मकान में दफ़नाये गये। वहां हर साल उनकी बरसी के दिन मेला लगता है।

नज़ीर एक धनी-मानी घर में पैदा हुए थे और

जबतक घर में धन रहा, उन्होंने न किसी की नौकरी की और न कोई काम-धन्धा ही। जब हालत अच्छी न रही तो एक मदरसा खोल कर बालकों को उर्दू-फ़ारसी पढ़ाने लगे। आगरे के कई अमीरों के लड़के भी नज़ीर से पढ़ते थे। उस ज़माने में लखनऊ में नवाब वाजिद अली शाह की हुकूमत थी।

नवाब साहब स्वयं कवि थे और कवियों का आदर करते थे। जब उन्हें पता चला कि नज़ीर लड़कों को पढ़ा कर अपनी गुज़र करते हैं तो उन्होंने अपने दो कर्मचारियों को नज़ीर को बुला लाने के लिए आगरा भेजा। भेंट-स्वरूप कुछ रुपये भी भेजे।

नज़ीर ने रुपये रख लिये और लखनऊ चलने का वादा भी कर लिया; लेकिन उन रुपयों से उन्हें कुछ ऐसी ग्लानि हुई कि रातभर नींद न आई। शायद उन्हें अपना यह शेर याद आता रहा—

ज़र की जो मोहब्बत तुझे पड़ जायगी बाबा।
दुख इसमें तेरी रूह बहुत पायगी बाबा॥

सुबह उठकर उन्होंने रुपये वापस कर दिये और उन आदमियों से कह दिया, "बादशाह से मेरा सलाम कहना, मेरी तरफ़ से माफ़ी मांगना और अर्ज़ कर देना कि नज़ीर फ़कीर तो अपनी झोंपड़ी में ही खुश

है। शाही महलों में रहना उसकी तकदीर में नहीं है।" उन लोगों ने बहुत समझाया, बार-बार मिन्नत की; किन्तु नज़ीर ने एक न सुनी । लाचार होकर वे लौट गये और नज़ीर अपने आखिरी दिन तक पढ़ाने का ही काम करते रहे ।

नज़ीर में एक बड़ा गुण यह था कि धार्मिक भेद-भाव उन्हें छू तक नहीं गया था । हिन्दुओं के लिए जैसी अच्छी भावनाएं उन्होंने दिखाई हैं, वैसी और मुसलमान कवियों में कम दिखाई देती हैं । हिन्दुओं के अवतारों, देवी-देवताओं और त्यौहारों के सम्बन्ध में कही गई उनकी कविताएँ इस बात की साक्षी हैं। उनका कहना था :

झगड़ा न करे मिल्लतो-मज़हब का कोई याँ,
जिस राह में जो आन पड़े ख़ुश रहे हर आँ,
ज़ुन्नार गले या कि बग़ल बीच हो क़ुरआँ,
आशिक़ तो क़लन्दर है न हिन्दू न मुसलमाँ।

(आदमी के लिए उचित है कि कौमी या मज़हबी झगड़े न उठावे । किसी भी धर्म का मानने वाला क्यों न हो, हँसी-खुशी में ज़िन्दगी बितावे । कोई जनेऊ पहने रहे या कुरान लिये रहे, सबका सिरजनहार तो न हिन्दू है न मुसलमान ।)

होली-दिवाली इत्यादि हिंदू त्यौहारों को नज़ीर ऐसे जोश से मनाते थे कि हिन्दुओं को भी मात कर देते थे।

नज़ीर दिल के बड़े उदार थे। एक दिन अपनी तनख़्वाह के रुपए लिये मदरसे से जा रहे थे। रास्ते में एक आदमी ने कन्या-दान के लिए कुछ सहायता मांगी। नज़ीर ने सारे रुपए तुरन्त उसे दे दिये।

दयालु भी ऐसे थे कि कोई क्या होगा! एक दिन घोड़े पर चढ़े कहीं जा रहे थे। चलते-चलते कोड़ा जो मारा तो घोड़े के न लग कर एक राहगीर के लग गया। नज़ीर को इतना दुःख हुआ कि उसी रोज़ से कोड़ा रखना छोड़ दिया।

स्वभाव इतना सरल था कि जब घर से निकलते तो लोग अक्सर रोक कर खड़े हो जाते। कहते, "मियां, पहले कविता सुनाओ। तब आगे जाने देंगे।" नज़ीर वहीं बैठ जाते और घंटों कविता-पाठ हुआ करता। फेरी से माल बेचने वाले लोग उनसे कविताएँ लिखवा कर ले जाते और उन्हें गा-गाकर माल बेचा करते। बहुत-से भीख मांगने वाले भी उनसे कविताएं ले जाते। मुसलमान फ़क़ीर जब हिन्दुओं के यहां भीख मांगने जाते तो कृष्ण की महिमा में लिखी नज़ीर की कविताएं गाते:

क्या क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन,
ऐसा था बाँसुरी के बजैया का बालपन।

× × ×

हर मन की हो के मोहनी और चित लुभावनी,
निकली जहां धुन उसकी, वो मीठी सुहावनी।
सब सुनने वाले कह उठे, जय जय हरी हरी,
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बाँसुरी।

नज़ीर आम लोगों के कवि थे। उन्होंने किसी बड़े आदमी की प्रशंसा में कभी एक शब्द भी नहीं लिखा। उन्होंने जो कुछ लिखा, ऐसा लिखा कि वह मामूली लोगों की भावना को छुए और आम लोग उससे लाभ उठा सकें। यूरोप के एक प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर फेलन ने लिखा है, "नज़ीर ही एक ऐसा कवि है, जो यूरोपियनों की निगाह से कवि कहे जाने का अधिकारी है। उसकी कविताओं ने आम लोगों के दिलों में राह की है। लोग उसकी कविताओं को सड़कों, गलियों और खेतों में गाते फिरते हैं। वही एक ऐसा कवि था, जिसने बच्चों की ममता पर कविताएं लिखी हैं और दुखी लोगों के साथ हमदर्दी दिखाई है। वह आज़ाद स्वभाव का आदमी था और भाग्य-दुर्भाग्य के बीच भेद नहीं करता था।"

नज़ीर की कविताएँ बड़ी प्रभाव-पूर्ण और सरस हैं। भाषा इतनी सरल है कि बेपढ़े लोग भी आसानी से समझ सकते हैं।

उर्दू भाषा के विद्वान् सैयद मोहम्मद महमूद रज़वी ने अपनी पुस्तक 'रूह नज़ीर' में लिखा है, "नज़ीर की ज़बान आम-फ़हम सुबोध है, जो रोज़मर्राह घरों में बोली जाती है। नज़ीर फारसी और अरबी ज़बानों को ग़ैर मुल्की विदेशी ज़बान समझते थे।"

नज़ीर ने फारसी में कठिन शब्दों का बहुत कम प्रयोग किया है। सीधी-सादी भाषा में कही गई उनकी कविताओं में इतना मिठास और आकर्षण है कि सुनने वालों को ऐसा मालूम होता है, मानो वे किसी तेज़ी से बहती नदी का कलकल नाद सुन रहे हों।

इन्हीं विशेषताओं के कारण पढ़े-बेपढ़े सभी में नज़ीर की कविता का समान रूप से प्रचार हुआ।

नज़ीर ने हर एक विषय पर बड़ी-बड़ी नज़्में (कविताएँ) लिखी हैं। आगे उनकी कुछ चुनी हुई नज़्में दी जाती हैं।

१

सब ठाठ पड़ा रह जावेगा

टुक हिर्स-ओ-हवा[१] को छोड़ मियाँ, मत देस-बिदेस फिरे मारा,
क़ज्ज़ाक[२] अजल[३] का लूटे है, दिन रात बजाकर नक़्क़ारा,
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतुर[४], क्या गोने पल्ला सर भारा
क्या गेहूँ, चावल, मोंठ, मटर, क्या आग-धुंवा और अंगारा,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

गर तू है लक्खी बंजारा और खेप भी तेरी भारी है,
ए ग़ाफ़िल तुझसे भी चतुरा, इक और बड़ा ब्योपारी है,
क्या शक्कर-मिस्री, कन्द, गरी, क्या साँभर मीठा खारी है,
क्या दाख, मुनक़्के, सोंठ, मिर्च, क्या केसर, लोंग, सुपारी है,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

तू बधिया लावे बैल भरे, जो पूरब पच्छिम जावेगा,
या सूद बढ़ाकर लावेगा, या टोटा-घाटा पावेगा,
क़ज्ज़ाक अजल का रस्ते में जब भाला मार गिरावेगा,
धन-दौलत, नाती, पोता क्या, इक कुनबा काम न आवेगा,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

---

१. लोभ, मोह-माया २. लुटेरा, डाकू ३. मौत ४. ऊंट

हर मंजिल में अब साथ तेरे, ये जितना डेरा-डांडा है,
ज़र[1] दाम दिरम[2] का भांडा है, बन्दूक, सिपर[3] और खांडा है,
जब नायक तन का निकल गया, जो मुल्कों मुल्कों हांडा है,
फिर हांडा है ना भांडा है, ना हलवा है ना माँडा है,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

जब चलते-चलते रस्ते में ये गोन तेरी रह जावेगी,
इक बधिया तेरी मिट्टी पर, फिर घास न चरने आवेगी,
ये खेप जो तूने लादी है, सब हिस्सों में बट जावेगी,
धी-पूत, जवाई, पोता क्या, बंजारिन पास न आवेगी,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

ये धूम-धड़क्का साथ लिये, क्यों फिरता है जंगल-जंगल,
इक तिनका साथ न जावेगा, मौक़ूफ़[4] हुआ जब अन्न और जल,
घर-बार अटारी चौपारी, क्या खासा तनसुख[5] है मलमल,
क्या चिलमन[6] पर्दे फर्श नये, क्या लाल पलंग और रंगमहल,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

क्यों जी पर बोझ उठाता है, इन गोनों भारी भारी के,
जब मौत का डेरा आन पड़ा, तब दूने हैं ब्योपारी के,
क्या साज जड़ाऊ ज़र[7] जेवर, क्या गोटे थान कनारी के,

१. धन, सोना २. एक सिक्का ३. ढाल ४. समाप्त ५. एक तरह का कपड़ा ६. पर्दे ७. धन

क्या घोड़े ज़ीन सुनहरी के, क्या हाथी लाल अंबारी के,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

हर आन नफ़ा और टोटे हैं, क्यों मरता फिरता है बन बन,
टुक गाफ़िल दिल में सोच जरा, है साथ लगा तेरे दुश्मन,
क्या लौंडी-बाँदी-दाई-दवा, क्या बन्दा चेला नेक चलन,
क्या मंदिर-मस्जिद,ताल,कुँआ,क्या खेती-बाड़ी,फूलचमन,
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब छोड़ चलेगा बंजारा।

२

चलने की फिक्र करो बाबा

बटमार[1] अजल[2] का आ पहुँचा, टुक इसको देख डरो बाबा।
अब अश्क[3] बहावो आंखों से, और आहें सर्द भरो बाबा,
दिल हाथ उठा इस जीने से, ले बस मनमार मरो बाबा,
जब बाप की ख़ातिर रोते थे, अब अपनी ख़ातिर रो बाबा,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फिक्र करो बाबा।

अब जीने को तुम रुख़सत[4] दो और मरने को महमान करो,
ख़ैरात करो एहसान करो, या पुन्न करो या दान करो,
या पूरी लड्डू बनवाओ, या ख़ासा हलवा नान करो,
कुछ लुत्फ़ नहीं अब जीने का, अब चलने का सामान करो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,

१. लुटेरा २. मौत ३. आंसू ४. बिदाई

अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

दिल काटो अपना जीने से, अब और गले को मत काटो,
अब चाट फ़नाकी[1] टुक[2] चक्खो और ख़ून किसीका मत चाटो,
धुन छोड़ो हिस्से बख़रे की, और भाजी अपनी तुम बाटो,
नाकुन्द बछेरे कूद चुके, अब और दोलत्ती मत छाटो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

ये अस्प[3] बहुत कूदा उछला, अब कोड़ा मारो ज़ेर[4] करो,
जब माल इकट्ठा करते थे, अब तन का अपने ढेर करो,
गढ़ टूटा लश्कर भाग चुका, अब म्यान में तुम शमशीर[5] करो,
तुम साफ़ लड़ाई हार चुके, अब भगने में मत देर करो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

सर काँपा चाँदी बाल हुए, मुंह पीला पलकें आन झुकीं,
क़द टेढ़ा कान हुए बहरे, और आँखें भी चुंधियाय गईं,
सुख नींद गई और भूक घटी, दिल सुस्त हुआ आवाज़ नहीं,
जो होनी थी सो हो गुजरी, अब चलने में कुछ देर नहीं,
मन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

गर अच्छी करनी नेक अमल[6], तो दुनिया से ले जाओगे,

---

१. मौत २. ज़रा ३. घोड़ा ४. वश में ५. दुधारी तलवार ५. आचरण

तो घर अच्छा सा पाओगे, और बैठ के सुख से खाओगे,
और ऐसी दौलत छोड़के तुम, जो खाली हाथों जाओगे,
फिर कुछ भी नहीं बन आवेगा, घबराओगे, पछताओगे,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फिक्र करो बाबा।

ये उम्र जिसे तुम समझे हो, ये हरदम तन को चुनती है,
जिस लकड़ी के बल बैठे हो, दिन-रात ये लकड़ी घुनती है,
तुम गठरी बाँधो कपड़े की, और देख अजल[1] सर धुनती है,
अब मौत कफ़न के कपड़े का, याँ ताना-बाना बुनती है,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

३

दुनिया धोके की टट्टी है

ये पैठ अजब है दुनिया की, और क्या क्या जिन्स[2] इकट्ठी है,
याँ माल किसी का मीठा है, और चीज़ किसी की खट्टी है,
कुछ पकता है कुछ भुनता है, पकवान मिठाई पट्टी है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, ना चूल्हा-भाड़ ना भट्टी है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

---

१. मौत २. पैदावार

कोई ताज खरीदे हँस-हँसकर, कोई तख़्त खड़ा बनवाता है,
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई गुदड़ी ओढ़े जाता है,
कोई भाई बाप चचा नाना, कोई दादा पोता कहाता है,
जब देखा खूब तो आखिर को, ना रिश्ता है ना नाता है,
गुल-शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कोई सेठ महाजन लाखपती, बज्जाज कोई पनसारी है,
याँ बोझ किसी का हल्का है, और खेप किसी की भारी है,
क्या जाने कौन खरीदेगा, और किसने जिन्स उतारी है,
जब देखा खूब तो आखिर को, दल्लाल न कोई ब्योपारी है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कोई लोटे कूचे गलियों में, तैयार किसी का डेरा है,
कोई बाग-कुआँ बनवाता है, और घेर किसी ने घेरा है,
नित क़जिये झगड़े रहते हैं, ये मेरा है ये तेरा है,
जब देखा खूब तो आखिर को, ना तेरा है ना मेरा है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कहीं धूम मची है कर्ज़े की, कहीं क़र्ज़ों का दुःख खेना है,
कोई हीरा पन्ना परखावे, और बेचे कोई चबेना है,

हर रोज़ तकाज़ा धरना है दुख देना पैसा लेना है,
जब देखा ख़ूब तो आखिर को, कुछ लेना है ना देना है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सर को घोट मुंडाता है,
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंगे मुंगे आता है,
कोई पूजा कथा बखाने है, खोई छापा तिलक लगाता है,
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को, सब छोड़ अकेला जाता है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

४

जब आशा-तिशना दूर हुई

लो सब्रो-क़नाअत[1] साथ मियाँ, सब छोड़िये बातें लोभ भरी,
जो लोभ करे उस लोभी की, नहीं खेती होती जान हरी,
सन्तोष तवक्कुल[2] हिरनों ने, जब हिर्स[3] की खेती आन चरी,
फिर देख तमाशे कुदरत के, और लूट बहारें हरी भरी,
जब आशा-तिशना[4] दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

---

१. सन्तोष २. सन्तोष, भगवान के भरोसे रहना ३. लोभ ४. लालच, मोह-माया

गर हिर्सो-हवा[1]-ओ-लालच की, है दौलत तेरे पास धरी,
तू खाक स ऽझ इस दौलत को, क्या सोना रूपा लाल ज़री,
हाथ आया जब ऽ तोख दरब[2], तब सब दौलत पर धूल पड़ी,
कर ऐश मज़े सन्तोखी बन, जय बोल मुरलियावाले की,
जब आशा-तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी हरी।

इस हिर्सो-हवा के बीजों को, जो लोभी दिल में बोते हैं,
वो चिन्ता मारे लोभ भरे, नित ख़्वार[3] हमेशा होते हैं,
जो हाथ पसारे लालच कर, वो माथा कूट के रोते हैं,
और हाथ जिन्होंने खींच लिया, वो पाँव पसारे सोते हैं,
जब आशा-तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

इस लोभपुरी की गलियों की, जब मुंह पर तेरे धूल पड़ी,
बेचैन रहेगा हर साअत[4] आराम न होगा एक घड़ी,
चल लोभके सरपर जूती मार, और लोभी तनपर मारछड़ी,
कर सुमिरन कुंज-बिहारी का, जैबोल मुकुट की घड़ी-घड़ी,
जब आशा-तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

ये शहद बुरा है लालच का, इस मीठे को मत खा प्यारे,
ये शहद नहीं ये ज़हर निरा, इस ज़हर उपर मत जा प्यारे,

---

१. लालच मोह-माया २. धन ३. ज़लील ४. घड़ी, समय

जो मक्खी इसमें आन फंसी, फिर पंख रहे लिपटा प्यारे,
सर पटके रोवे हाथ मले, है लालच बुरी बला प्यारे,
जब आशा तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

गर हिर्स-ओ-हवा[1] के फन्दे में, तू अपनी उम्र गंवावेगा,
ना खाने का फल देखेगा, ना पाने का सुख पावेगा,
इक दो कपड़े के तार सिवा, कुछ साथ न तेरे जावेगा,
ए लोभी बन्दे लोभ भरे, तू मरकर भी पछतावेगा,
जब आशा तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

है जबतक तुझमें लोभ भरा, तू चोर उचक्का तगड़ा है,
है पेच पुरानी पगड़ी से, जो सर पर तेरा पगड़ा है,
हर आन किसी से किस्सा है, हर वक्त किसी से झगड़ा है
कुछ मीन नहीं,कुछ मेख नहीं,सब हिर्सो-हवाका झगड़ा है
जब आशा तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

५

ज़र की जो मोहब्बत तुझे पड़ जायगी बाबा

ज़र[2] की जो मोहब्बत तुझे पड़ जायगी बाबा,
दुख इसमें तेरी रूह, बहुत पायगी बाबा,

१. लोभ, मोह-माया २. धन, सोना

हर खाने को हर पीने को, तरसायगी बाबा
दौलत जो तेरे याँ है, न काम आयगी बाबा,
फिर क्या तुझे अल्लाह से, मिलवायगी बाबा।

दौलत जो तेरे पास है, रख याद तू ये बात,
खा तू भी और अल्लाह की, कर राह में खैरात,
देने ही से इसके, तेरा ऊंचा रहेगा हात,
और याँ भी तेरी गुजरेगी, सौ ऐश[1] से औक़ात[2],
और वाँ भी तुझे सैर ये, दिलायगी बाबा।

दाता की तो मुशकिल कोई अटकी नहीं रहती,
चढ़ती है पहाड़ों के ऊपर, नाव सखी[3] की
और तूने बखीली[4] से, अगर जमां उसे की,
तो याद ये रख बात, कि जब आयेगी सख्ती,
खुश्की में तेरी नाव, ये डुबायगी बाबा।

गर नेक कहाता है, कर इस जाय कुछ एहसान,
हिन्दू को खिला पूरी, मुसलमां को खिला नान[5]
खा तू भी इसे शौक से, और ऐश पै रख ध्यान,
तू इसको न खावेगा, तो ये बात यकीं जान,
इक रोज़ ये ख़न्दी, तुझे खा जायगी बाबा।

उससे यही बेहतर है, तू ही अब इसे खाजा,
बेटों को रफीक़ों[6] को, अजीज़ों[7] को खिला जा,

१. आराम २. समय ३. दानी ४. कंजूसी ५. रोटी ६. मित्र ७. सम्बन्धी

सब रूबरू अपने, मए-इशरत[1] में उड़ा जा,
फिर शौक़ से हँसता हुआ, जन्नत को चला जा,
वरना तुझे हर दुख में, ये फंसवायगी बाबा।

ये तो न किसी पास रही है न रहेगी,
जो और से करती रही, वो तुझसे करेगी
कुछ शक नहीं इसमें, जो बढ़ी है सो घटेगी,
जबतक तू जियेगा, तुझे ये चैन न देगी,
और मरते हुए पर, ये ग़ज़ब ढायेगी बाबा।

जब मौत का होवेगा, तुझे आन के धड़का,
और नज़अ[2] तेरे आन के, दम देवेगी भड़का,
जब इसमें तू अटकेगा, न दम निकलेगा फड़का
कुप्पों में रूपै[3] डाल के, जब देवेंगे खड़का,
तब तन से तेरे जान निकल जायगी बाबा।

तू लाख अगर, माल के सन्दूक भरेगा,
है ये तो यक़ीं आखिरश, इक दिन तू मरेगा,
फिर बाद तेरे, इसपै जो कोइ हाथ धरेगा,
और नाच मजा देखेगा, और ऐश करेगा,
और रूह तेरी क़ब्र में चिल्लायगी बाबा।

---

१. भोगविलास २. दम निकलते वक़्त की हालत ३. एक तरह का कपड़ा

६
कौड़ी न रख कफ़न को

ज़रदार है तो हरगिज़, मत मार अपने मन को
तनज़ेब[1] तनसुखों[2] से, तरसा न अपने तन को,
जो नर चलन चलै है, चल तू भी उस चलन को,
मुरशद[3] का है ये नुक़्ता, रख याद इस सख़ुन[4] को,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख़ डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

ये न्यामतें हैं जितनी, जो कुछ मिले सो खाजा,
ताश[5] और वावले में, इक बार जगमगा जा,
पापी बख़ील मत बन, दाता सखी कहा जा,
इक़दम तू अपना डँका, मन मानता बजाजा,
दिल की खुशी की खातिर, चख डाल माल धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

सन्दूक में जो ज़र है, उसको भी ले गवाँदे,
मय[6] के बहा के नाले, तबलों को खड़खड़ा दे,
कोठे मकाँ हवेली, सब खोद कर खुलादे,
कड़ियां तलक जलादे, ईंटें तलक उड़ादे,
दिल की खुशी की खातिर चख डाल माल धन को।

---

१. २. कपड़े की किस्में ३. गुरु ४. बात, कलाम ५. एक प्रकार का कपड़ा ६. शराब

गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

जो जो बखील[1] कहन, ज़र छोड़ कर मरेगा,
या खायगा जवाई, या खालसा[2] लगेगा,
तेरी वही है जो कुछ, राहे ख़ुदा में देगा,
खाता खिलाता हँसता, तू भी सदा रहेगा,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख़ डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

जिसने ये ज़र दिया है, फिर वो ही धन भी देगा,
मालो मकाँ हवेली, बाग़-ओ चमन भी देगा,
जीता रहेगा जबतक, खाने को अन भी देगा,
मर जायगा, तो वो ही तुझको कफ़न भी देगा,
दिल की खुशी की ख़ातिर चख डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

जितने गड़े दबे हैं, सब खाले और खिलाले,
रख धुन उसी की दिल में, जब खाले और खिलाले,
अपना समझ उसी को, अब खाले और खिलाले,
अब तो नज़ीर तू भी, सब खाले और खिलाले,
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

१. कंजूस २. सरकार ले लेगी

७
इस हात दे उस हात ले

दुनिया अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[१] यां की सात ले,
नेकी का बदला नेकी है, बद से बदी की बात ले,
मेवा खिला मेवा मिले, फल फूल दे फल-पात ले,
आराम दे आराम ले, दुख-दर्द दे आफ़ात[२] ले,
कलजुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

कांटा किसी के मत लगा, गो मिस्ले गुल[३] फूला है तू,
वो तेरे हक़्क़ में तीर है, किस बात पै फूला है तू,
मत आग में डाल और को, फिर घास का पूला है तू,
सुन रख ये नुक़्ता[४] बेख़बर, किस बात पर फूला है तू,
कलजुग नहीं करजुग है ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

जो और की बस्ती रखे, उसका भी बस्ता है पुरा,
जो और के मारे छुरी, उसके भी लगता है छुरा,
जो और की तोड़े धुरी, उसका भी टूटे है धुरा,
जो और की चेते बदी, उसका भी होता है बुरा,
कलजुग नहीं करजुग है ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

---

१. पैदावार, कमाई २. मुसीबतें ३. फूल ४. सीख

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स याँ तय्यार है,
आराम में आराम है, आज़ार[1] में आज़ार है,
दुनिया न जान इसको मियाँ, दरिया की ये मंजधार है,
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है,
कलजुग नहीं करजुग है ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

कर चुक जो कुछ करना हो याँ, ये दम तो कोई आन है,
नुक़सान में नुक़सान है, एहसान में एहसान है,
तुहमत में याँ तुहमत लगे, तूफ़ान में तूफान है,
रहमान को रहमान है, शैतान को शैतान है,
कलजुग नहीं करजुग ह ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

अपने नफ़े के वास्ते, मत और का नुक़सान कर,
तेरा भी नुक़साँ होयगा, इस बात पर तू ध्यान कर,
खाना जो तू खा देखकर, पानी पिये तू छान कर,
याँ पाँव को रख फूंक कर, और खौफ से गुज़रान कर
कलजुग नहीं करजुग है ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

८

इस हाथ करो, उस हाथ मिले

है दुनिया जिसका नाँव मियाँ, ये और तरह की बस्ती है,

१. दुःख

जो महंगों को ये महंगी है, और सस्तों को ये सस्ती है,
याँ हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन अदालत बस्ती है,
गर मस्त करे तो मस्ती है, और पस्त करे तो पस्ती है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती[1] है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है,

जो और किसीका मान रखे, तो उसको भी अरमान मिले,
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान मिले,
नुक़सान करे नुक़सान मिले, एहसान करे एहसान मिले,
जो जैसा जिसके साथ करे, फिर वैसा उसको आन मिले,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो पार उतारे औरों को, उसकी भी पार उतरनी है,
जो ग़र्क़[2] करे फिर उसको भी, याँ डुबकों डुबकों करनी है
शमशीर,[3] तबर बन्दूक, सनाँ[4] और नश्तर तीर नहरनी है,
याँ जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो ऊपर ऊंचा बोल करे, तो उसका बोल भी बाला है,
और दे पटके तो उसको भी, कोई और पटकने वाला है,
बेजुर्मोख़ता जिस ज़ालिमने, मज़लूम[5] ज़िबह[6] कर डाला है,

१. न्याय-परायणता, २. डुबोना ३. तलवार ४. एक प्रकार का अस्त्र ५. पीड़ित ६. बध करना, मारना

उस ज़ालिम के भी लोहू का, फिर बहता नद्दी-नाला है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो मिस्री और के मुंह में दे, फिर वो भी शक्कर खाता है,
जो और के तईं अब टक्कर दे, फिर वो भी टक्कर खाता है,
जो और को डाले चक्कर में, फिर वो भी चक्कर खाता है,
जो और को ठोकर मार चले, फिर वो भी ठोकर खाता है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो और किसी को नाहक़ में, कोई झूठी बात लगाता है,
और कोई गरीब और बेचारा, हक़ नाहक़ में लुट जाता है,
वो आप भी तो लुट जाता है, और लाठी पाठी खाता है,
जो जैसा-जैसा करता है, फिर वैसा वैसा पाता है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

९

अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त

हैं मर्द अब वही कि जिन्हों का है फ़न[१] दुरुस्त[२],
हुरमत[३] उन्होंके वास्ते, जिनका चलन दुरुस्त,

१. पेशा, आचरण २. सही ३. सम्मान

रहता नहीं किसी का, सदा माल धन दुरुस्त,
दौलत रही किसी की, न बागो चमन दुरुस्त,
जितने सख़ुन[1] हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

गर दौलतों से उसका भरा है तमाम घर,
बीमार है तो ख़ाक से बदतर है सब वो ज़र,
हो तन्दुरुस्त गरचे ये मुफ़लिस[2] है सरबसर[3],
फिर ना किसी का खौफ़, ना हरगिज़ किसी का डर,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

आजिज़[4] हो या हक़ीर[5] हो, पर तन्दुरुस्त हो,
बेज़र[6] हो या अमीर हो, पर तन्दुरुस्त हो,
क़ैदी हो या असीर[7] हो, पर तन्दुरुस्त हो,
मुफ़लिस हो या फ़क़ीर हो, पर तन्दुरुस्त हो,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

परवा नहीं अगरचे, लिखा या पढ़ा न हो,
मोहताज हक़ सिवा पै किसी और का न हो,
हुस्नो-जमाल[8] इल्मो-हुनर, गो मिला न हो,
इक तन्दुरुस्ती चाहिए, कुछ होवे या न हो,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

---

१. बात, कलाम २. निर्धन ३. बिलकुल ४. लाचार ५. तुच्छ ६. निर्धन ७. बन्दी ८. सौन्दर्य

१०

जिस पै आती है मुफ़लिसी

जब आदमी के हाल पै आती है मुफ़लिसी[1],
किस किस तरह से उसको सताती है मुफ़लिसी,
प्यासा तमाम रोज बिठाती है मुफ़लिसी,
भूका तमाम रात सुलाती है मुफ़लिसी,
ये दुःख वो जाने, जिस पै कि आती है मुफ़लिसी।

जो अहले फ़ज़्ल[2] आलिम-वो-फ़ाज़िल[3] कहाते हैं,
मुफ़लिस हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं,
पूछे कोई अलिफ़[4] तो उसे बे[5] बताते हैं,
वो जो ग़रीबग़ुर्बा के लड़के पढ़ाते हैं,
इनकी तो उम्र भर, नहीं जाती है मुफ़लिसी।

जब रोटियों के बटने का आकर पड़े शुमार,
मुफ़लिस को देवें एक तवंगर[6] को चार-चार,
गर और मांगे तो उसे झिड़के हैं बार बार,
इस मुफ़लिसी का आह, बयां क्या करूं मैं यार,
मुफ़लिस को इस जगह भी चबाती है मुफ़लिसी।

बीबी की नथ न लड़कों के हाथों कड़े रहे,
कपड़े मियां के, बनिये के घर में पड़े रहे,
जब कड़ियाँ बिक गईं तो खंडर में पड़े रहे,
जंजीर, ना किवाड़, ना पत्थर गड़े रहे,
आख़िर को ईंट ईंट, खुदाती है मुफ़लिसी।

---

१. निर्धनता २. समर्थ लोग ३. विद्वान ४. उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर ५. उर्दू वर्णमाला का दूसरा अक्षर ६. धनवान

११

है वो भी आदमी

दुनिया में पादशाह[१] है, सो है वह भी आदमी,
और मुफ़लिसो[२]-गदा[३] है सो है वो भी आदमी,
ज़रदार[४] बेनवा है, सो है वह भी आदमी,
न्यामत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी,
टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी ।

चलता है आदमी ही, मुसाफ़िर हो ले के माल,
और आदमी ही, मारे है फ़ांसी गले में डाल,
यां आदमी ही सैद[५] है, और आदमी ही जाल,
सच्चा भी आदमी ही निकलता है मेरे लाल,
और झूठ का भरा है, सो है वो भी आदमी ।

यां आदमी नक़ीब[६] हो बोले है बार-बार,
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार,
हुक्का सुराही जूतियां, दौड़े बग़ल में मार,
काँधे पै रखके पालकी, हैं दौड़ते कहार,
और उसमें जो पड़ा है, सो है वो भी आदमी ।

मरने में आदमी ही कफ़न करते हैं तैयार,
नहला धुला उठाते हैं, काँधे पै कर सवार,
कल्मा भी पढ़ते जाते हैं, रोते हैं ज़ार-ज़ार,
सब आदमी ही करते हैं, मुर्दे के कारोबार,
और वो जो मर गया है, सो है वो भी आदमी ।

---

१. बादशाह २. निर्धन ३. फ़क़ीर ४. मालदार ५. शिकार ६. साव-धान करने वाला, आवाज देने वाला।

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधी जी का विद्यार्थी जीवन
८. गंगा जी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरधर की कुण्डलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नज़ीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना